**हरदोई-उ.प्र.।** प्रसिद्ध गायक अनूप जलोटा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रोशनी। साथ हैं मारूती कार कॉन्सेप्ट के मालिक संजीव अग्रवाल व अन्य।

**जगरावां-पंजाब।** आध्यात्मिक कार्यक्रम में शिरोमणि अकाली दल के चेयरमैन दीदार सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हरबंस, ब्र.कु. अमरज्योति व ब्र.कु. सीमा।

**खेरा गाँव-उ.प्र.।** आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री संजीव बालियान। साथ हैं विधायक ठाकुर संगीत सोम तथा ब्र.कु. उषा।

**कोटा-राज.।** 'पंच दिवसीय ग्रीष्मकालीन बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के दौरान पार्षद रमेश पुटरा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला। साथ हैं डॉ. सपना व अन्य।

**लुधियाना-पंजाब।** ब्र.कु. परवीन एवं ब्र.कु. रजनी को सम्मानित करने के पश्चात् चित्र में वेद भारती महाराज,1008 महामण्डलेश्वर व अन्य।

**दिल्ली-महिपालपुर।** आई.सी.ए.आई. में सी.ए. स्टूडेंट्स के लिए आयोजित कार्यक्रम में आध्यात्मिकता के बारे में बताते हुए ब्र.कु. अनसूइया।

# दृष्टिकोण के रहस्य को समझें...

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

**जो** कुछ भी पहले हम बाहर से देखते हैं, वह सन्देश के रूप में हमारे मन में जाता है। मान लीजिए, छः फुट के एक आदमी को हमने देखा। यह पुरुष है या स्त्री है, वह हमारे सामने आया। आँखें तो हमारी छोटी-सी हैं लेकिन आदमी छः फुट का है। फिर हमने उसको देखा कैसे? हमारे मस्तिष्क पर उसका बहुत छोटा-सा प्रतिबिम्ब पड़ता है। उसका रंग क्या है, रूप क्या है, चेहरे के लक्षण क्या हैं, उसकी बनावट क्या है, उसकी आकृति-प्रकृति कैसी है - यह चित्र चित्रित होता है। सन्देश मस्तिष्क को पहुँचने के बाद में आत्मा इन सबका विश्लेषण करती है कि यह क्या है, क्या नहीं है। यह जो विश्लेषण की अवस्था है, जिसको हम विश्लेषण की प्रक्रिया कहते हैं, जब तक यह परिवर्तन नहीं होगी तब तक दृष्टि परिवर्तित नहीं हो सकती। बाहर से जो सन्देश आया वह उद्दीपन है, यह पहुँचने के बाद वहाँ से प्रतिक्रिया आती है कि यह छह फुट का मनुष्य है, पुरुष है या स्त्री है। यह फलानी जगह का रहने वाला है या वाली है। इसको मैंने कई साल पहले देखा था। इसका नाम यह है। उसका वो सारा रिकॉर्ड खोलकर चित्रित करता है। उस आदमी का नाम या सारा परिचय तो उसके चेहरे पर नहीं लिखा रहता। मन के अन्दर या आत्मा के अन्दर जो सारा रिकॉर्ड है, उससे तुलना करके आत्मा उसको पहचानने की कोशिश करती है। अन्दर की जो प्रतिक्रिया है, प्रत्युत्तर है, बाहर का जो उद्दीपन है उसकी प्रतिक्रिया या प्रत्युत्तर है - वह कैसे बदले? वह प्रतिक्रिया किस पर निर्भर है? अन्तर्दृष्टि पर। जब तक मनुष्य की अन्तर्दृष्टि नहीं बदलेगी तब तक बाहर की दृष्टि नहीं बदलेगी। वो दृष्टिकोण कैसे बदलेगा? परमात्मा की ज्ञान-मुरलियों से। परमात्मा मुरलियों में सुनाते हैं कि सब मरे पड़े हैं, ये मूर्छित हुए पड़े हैं, ये सब आसुरी सम्प्रदाय वाले हैं इत्यादि-इत्यादि। ये सारी बातें हम सुनते हैं, फिर हमारा प्रत्युत्तर उसके अनुसार होता है। जैसे कम्प्यूटर में प्रोग्राम डाला जाता है और कम्प्यूटर उसी प्रोग्राम अनुसार चीज़ हमारे सामने लाता है। जब परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान बुद्धि में भरता जाता है, धारण होता जाता है तब हमारा दृष्टिकोण बदलता है। जब दृष्टिकोण बदल जाता है तब दृष्टि भी बदलती है। क्योंकि दृष्टिकोण से पहला परिवर्तन होता है वृत्ति में। फिर वृत्ति से बदलती है स्मृति और स्थिति। उससे फिर हमारी दृष्टि जो है स्वयं बदल जाती है। अगर हम चाहते हैं कि हम अखण्ड पवित्रता का पालन करें, उसको किसी भी रीति से न गँवायें, वह सदा हमारी बनी रहे, उसके लिए हमारी दृष्टि ठीक रहे।

पवित्रता हमारी अनमोल निधि है। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी जीवन की सबसे बड़ी सम्पत्ति यही है। हम चाहे दुनिया की दृष्टि से बिल्कुल गरीब ही सही, किसी भी दृष्टि से हम लोगों से बहुत पीछे ही सही, लेकिन बाबा ने हमें जो पवित्रता रूपी अनमोल खज़ाना दिया है, यह तो अतुल है, इसका कोई मूल्य नहीं लगा सकता। सारी दुनिया के खज़ाने इसके सामने तुच्छ हैं। हम चाहते हैं कि हमारी दृष्टि ठीक रहे तो अपने दृष्टिकोण को ठीक रखें। दृष्टिकोण ठीक रखना है तो रोज़ हम मुरली सुनें। मुरली सुनते-सुनते हमारा दृष्टिकोण, हमारी अन्तर्दृष्टि, हमारी वृत्ति, हमारा सोचने का, देखने का तरीका बदले। जब वो बदलेगा तब हमारी दृष्टि धोखा नहीं देगी। जब तक हमें पूरी रीति से यह समझ नहीं होगी कि हम कौन हैं, किसकी सन्तान हैं, कहाँ से आये हैं, कहाँ जाना है तो हमारे में अन्तर-परिवर्तन नहीं होगा। अगर हमारा अन्तर-परिवर्तन नहीं होगा तो हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन नहीं होगा। इसलिए जब अन्तर-परिवर्तन होगा, तब ही बाह्य परिवर्तन होगा।

अगर हम केवल बाहरी परिवर्तन करने की कोशिश करेंगे, जैसे सूरदास ने अपनी आँखें निकाल दीं, तो क्या नतीजा निकला? उसकी सारी रचनाओं को आप पढ़कर देखिये कि आँखें निकालने के बाद भी उसके मन की स्थिति क्या थी, वो पता पड़ेगा। वह कहता है, हे गोपाल! संसार एक सागर है, इसमें काम रूपी मगरमच्छ, क्रोध रूपी ग्राह आदि सब मुझे खा रहे हैं। हे गिरधर! मुझे बचाओ। कविता की दृष्टि से उनकी कवितायें बहुत अच्छी रचनायें हैं, किंतु उन कविताओं को जिस विषय पर लिखा गया है, वो विषय उसके मन को प्रतिबिंबित करता है, उसकी अवस्था को झलकाता है।

**अन्दर की जो प्रतिक्रिया है, प्रत्युत्तर है, बाहर का जो उद्दीपन है उसकी प्रतिक्रिया या प्रत्युत्तर है - वह कैसे बदले? वह प्रतिक्रिया किस पर निर्भर है? अन्तर्दृष्टि पर। जब तक मनुष्य की अन्तर्दृष्टि नहीं बदलेगी तब तक बाहर की दृष्टि नहीं बदलेगी। वो दृष्टिकोण कैसे बदलेगा? बाबा की ज्ञान-मुरलियों से। बाबा मुरलियों में सुनाते हैं कि सब मरे पड़े हैं, ये मूर्छित हुए पड़े हैं, ये सब आसुरी सम्प्रदाय वाले हैं इत्यादि-इत्यादि।**